कहा जाता है। आधुनिक युग नवीन मुद्दों को स्थापित कर पुराने मुद्दों के विस्तारक का युग है। अब इस तरह बोलने के पुरात के हैं। परम्परागत सिद्धांत, मान्यताओं, विवाहों तथा मुद्दों का विकस्तन हो रहा है। ऐतिहासिक मुद्द काल रहे हैं। जाति का नोप हो रहा है। महानायक श्रेणी में व्यक्ति युद्ध को अकेला और दूरा हुआ अनुभव कर रहा है। कुटीयों, पूजान्य, अमाय, अभिप्न, भेकारी, गरीबी, निरंतरता, नगंता, बोधायण आज की आधुनिक कविता का लय सब सत्य बदल रहा है।

अतः आधुनिककाल की मुद्द युद्धि युद्धियों के लय में बैठा कि गुजरात के आधुनिक हिन्दी नाम की युद्धि युद्धियों सामान निर्माण में सुधारित किया गया है – पुराती के पुराती गहरा प्रेम और तज्ज्विन जोड़ युद्धि युद्धियों निर्माण, सामान्य मान्यता, नीति और आम, राष्ट्रीय साधारण विकलांग, वैकल्पिकता, वैकल्पिकता का आगु, देवताओं, आध्यात्मिक क्षेत्र, श्रीमलोकों, ध्यानं श्रीमलों का जनरिक राजनैतिक संदर्भों से साधृतार्क, व्याख्या व्याख्या, जीवन की गहरे दार्शनिकता, भिन्नता की गहराई, अनुभूति की पुरातियों, गुड्डार्ध और अनिता के पुराती आश्रों आत्मन्वय आदि का हम देखने लगे हैं।

पुर्वप्रतिमा: गुजरात की आधुनिक हिन्दी कविता का पुर्वप्रतिमा निर्माण बढ़ा ही सुझा। पुरातता हो गहरा है जबकि पुरातीन कवियों प्रतिमा का निर्माण केला आरंभ चार उद्गीपण वा उपदेश के लिए करते हैं। आधुनिक हिन्दी कविता का पुर्वप्रति निर्माण पुरातीन कवियों के पुरात्ति निर्माण शक्ति की तुलना में अत्यधिक तुलनात्मक रहता है। आधुनिक हिन्दी
काव्य के प्रृृति निलवण की कुछ विशिष्टता है। उनमें हैं नाचिन्य परिलक्षण होता है। कोई भी काव्य अपने तत्त्वात्मक परिस्थितियों का आधार होता है। यद्यपि कारण है कि महात्मा गाँधीजी के प्रभाव से स्तवार्थ वामन के रूप से स्वतंत्रता आन्दोलन हुआ और उसकी प्रृृतिवीचा रूप अपनी जन्मामूर्ति के प्रृृतिवीचा सौंदर्य को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने लगा।

ताथ ही रवीन्द्रनाथ और महार्षि अरविन्द का वाणिज्य एवं उदात्त सौंदर्य प्रभाव भी आधुनिक काव्य में प्रृृति होता है। यह एक और विशिष्ट सौंदर्यवर्धक तो दूसरी और श्री अरविन्द के प्रभाव से अशियानीवी तौलन का परिलक्षण होता है।

गुजरात के आधुनिक कवियों की प्रृृति मनीरणणालिक अत्यन्त विश्वसनीय, गहरी एवं दृढ़ प्रृृति होती है। प्राचीन काव्य में प्रृृति का निलवण आलंबन, उदासीन या उपदेश के रूप में हर तरह तक ही लिखा तथा किसी भी अन्य दृश्य तत्त्व की मूल्य पर खुश है। आज आर्थिक वाद एवं यांत्रिक वाद का विकास दृश्य के प्रभाव से आधुनिक हिन्दी काव्य में प्रृृति का पृृतीकीत्व प्रयोग निम्न ताज्जुर्ग में होने लगा है। ताथ ही विशिष्ट विशेषता भी पाया जाता है। प्रृृति के मात्रम से दृश्य-प्रेमी की व्यंग्या को बहुत उंग तथ्य प्रभाव हुआ है अर्थात विशिष्ट काव्य स्तर के आकारकार के साथ प्रृृति निलवण के विशिष्ट दृष्टिकोणों का भी प्राप्त हुआ है। वैज्ञानिक विषय के परिणाम स्तर स्तम्भ मनुष्य की बौद्धिक जागृति दृष्टि में विद्यासृष्टि का विस्तार हुआ। वैज्ञानिकता को व्यक्ति भी भिला। अल: प्रृृति-प्रेम के स्तर-स्तर आयाम हुए, धम्म एवं दृष्टि योजना में नूतनता का साधनों द्वा और मनुष्य की सर्वव्यस्त अनुभुति की दृष्टि अभिव्यक्ति हुई। पावर्तक-सैद्धांतिक अवमानण के प्रभाव स्तर प्रृृति के साथ विशेष रागात्मक, निरंतर सम्पर्क तथा तपस्या से प्रृृति की विद्यावट्ट दलना साबित हुई है।

हावााली के प्रकृतिवीचा प्रृृति ने श्री प्रृृति को ही प्राप्ति से नहीं कवित्व ने वैज्ञानिक, तात्विक, तंत्रिक, वौद्धिक तथा अत्यन्त विभाजी उपादानों को गुणत होते हुए, हिन्दी कविता को नवीन शैली में अभिव्यक्ति किया। फलत: प्रृृतिवीच उपादानों के प्रृृति ध्यान के क्षेत्र स्तर ने हावााली और प्रृृति, धम्म, लोक-सैद्धांतिक के प्रृृति जो नर्म, आधुनिक नववर्ती आदि का सम्मान करते हुए भूमिका मनोरंजन एवं परियोजनाओं को अभिव्यक्ति मिली।
आज पृष्ठि के साथ साहित्य का रिस्ता आलंकार का रिस्ता है, उद्दीपन का नहीं। आधुनिक कविता में पृष्ठि में आध्यात्मिकता का भी आरोप देखा जाता है। दैवत का स्थान आज मानकर्ता ने हो लिया है। मान पूजन के स्थान पर संयुक्त मानकर्ता की सहायता और हमदर्दी प्रतिष्ठित हो गुलि है। प्राचीन धार्मिक विचारात्मक और विद्वानों के दिल बारे में कारण आज के साहित्यिकों ने आज के संग्राम को नई दृष्टि से देखी का प्रयात्त किया है।

अधिकार है स्थान पर ज्ञान, दैवत और समृद्धि के स्थान पर ज्ञान धार्मिक उप्योग ने व्यक्ति के नये लय में अधिक स्थान पाया। पृष्ठि को इन कवियों ने झड़ ब्रह्माण्डविलुप्त में नई दृष्टि से देखा। पृष्ठि के जीवन सत्य में मान बाह्य स्व दर्शन की भावना की जगह पर उसके अन्तःस्वरूप का परिचय आधुनिक जीवन को मिला। पृष्ठि जड़ न रक्षा, अपने वेतन अस्तित्व में मनुष्य मन को आकर्षित करते हैं तथा हुई। आधुनिक काल के कवियों ने आधुनिक काव्य को नयी समृद्धि पुदान की। उन्होंने पृष्ठि के लीन्दर्स से आत्मानुप्रज्ञा शक्ति का नवीन परिचय दिया। उन्होंने अध्यात्म, ज्ञान और समृद्धि तत्त्वों से का काव्य को उभारा और उसे यथार्थ दर्शन की ओर उन्मुक्त किया। फलतः पृष्ठि में अधिक व्यापक आत्मीयता का भाव प्राप्त हुआ।

आधुनिक कवियों के अपनी निराशा, व्यापक ज्ञान सीन्दर्ब और लघु व्यक्तित्व को प्राप्त करने के लिए पृष्ठि की गोद में पशु नहीं जिन्होंने अपनी पुरुषता और गतिहीन जीवन की व्यास को शांत करने के लिए सामीपीय स्थायित्व किया।

गुजरात के आधुनिक हिंदी काव्य की यह विशेषता रही है कि इसने नये तत्त्वों को स्वीकार करते हुए भी अपनी परम्परा से शक्ति का संबंध प्राप्त किया है। आधुनिक काल का मूल त्वर मान के स्थान पर वैदिक अधिक है। मनुष्य की

1. हिंदी साहित्य की भूमिका : डॉ. ज्ञानीप्रसाद - पृ. १४२
शास्त्रियों का भौतिक गूढ़ आकाश वाली युग्मि ने विज्ञान के नये विकास के प्रशंसा से प्रशंसित को अब नमकीन जल्दी से देखा। विज्ञान ने प्रशंसित के लोकों आदरण में दिये हुए वेला जीवन तत्व को प्रशंसित त्यों दिया। प्राचीन काल से को आते हुए पूरी नदियाँ, पर्वत, नम, जल, या आदि को वेशनता मिली। उन्होंने प्रशंसित को जीवित व्यक्तित्व के लिए स्वीकार किया। प्रशंसित का ख्याति दिखा इतना काल की रचनाओं में विस्तार है। वे विश्व जीवन साधक हैं। अतः एक और इनमें सामाजिक जीवन-स्वरुप और स्थायिक वातावरण का विकास निर्मित है और दूसरी और उनके सहारे उद्योगों का ख्याति दिखा है। इन कवियों ने व्यक्ति जीवन-परिवर्तन के प्रशंसित चित्रों को घड़ी लगा दिया है। आधुनिक विचार प्रशंसित को 

कविवर डॉ० अम्बाप्रेक्ष नान्याजी ने प्रशंसित चित्रों को बड़े ही तुंड़े ही टाइप से प्रस्तुत किया है। वैसे—

विश्विलित होता हिमालयरि
ज्वों रवि किरणों के
प्रकाश ताप से
पिन्न रमा था
तम पूरा सुनिबन्ध
कैसे हर अलङ्कार ताप से।

— डॉ० नान्याजी

यहाँ कविवर नान्याजी ने रवि किरणों से विश्विलित होते हिमालयरि और अलङ्कार से विश्विलित होते कवि काल को अबने-सामने रखकर पूर्व प्रशंसित तृप्त के पात्र में व्यक्ति ही मनोविकास की रचना व्यक्ति की है।

---

1. प्रमोचा: डॉ० अम्बाप्रेक्ष नान्याजी
वायुपान के यातायात ते दिखावाले श्रेष्ठ पत्ताकांजी शोभा भी
लृष्ट्वी है -

रेता लगता है वैसे कोई धनिया

दूसरा है रईस रेतम की

और पवन के पंक्वों पर चढ़

फिरते हैं फाले लई के

उफ्फा अर्थ या फि

सेम्प्रे की कोई डोडी

टक गई है

और उड़ रहे हैं उसके ही

छिदेके रेस।

प्रसिद्ध उदाहरण में उड़ी लई के कोडों तथा अर्थ और सेम्प्रे के रक्षर्य

रेतम के द्वारा कवि ने बादलों की शोभा का अंकन किया है। यहाँ कवि ने बड़े

वनों के पुतलों को धन-अभाव कब्ज़ा उसे पाया, जीवन दर्शन गतिपूर्ण बता दिया है।

निम्नस्थ परिस्थितियों में कवि ने प्रूक्षति के माध्यम से नारी लौंदर्य के पार

जाने की कोशिश की है। वैसे -

लघु की यह दूसर धूम धोई चाँदनी

बदल देती है स्तव्यों को प्रूक्षति के,

अर्थ देती है नये

जीवन - श्वान को।

उभा, संयोज, दिन, रात, पेय, नम, तागर, हुआ, ओत, चन्द्र, पवन

अच्छे के सबसे भावात्मक विचारों को लिए इस कवि ने उल्लभ्य तौन्दर्य का तर्जन

किया है। वैसे -

------------------------

1. गुरुरातः समकालीन हिन्दी कविता - धौ अम्बाक्कर संस्कर - पृष्ठ 146
2. प्रूत्वा - धौ अम्बाक्कर नागर - पृष्ठ 66
निरंग नम में जा रही है चाँद की बारात
और भू में चाँदनी चित्तौं हुई अवदात
गंगवाही पदन प्रेषित तरस्मृ की वह बृहस्त
करती अतीन्द्रिय लोक की अद्दूल अयुरब तृष्णित ।

श्री नरेश मेहता ने गिम्यानी पृष्ठति के जीवांत चित्र उकेरे हैं -

रिम रिम रिम
मानवारे लगा
देवक्ष्याओं ती रिम फिसल रही हैं,
चाँदनियों की पारदर्शिता मलम में
लाल्यमयी सफान्ता दृष्टियाँ
अगर गुर्गातीं ।

उन्होंने बेचों में कांती फिरों और राम प्रतीपात झारी की आरसू की अभिलाषा दोनों की सफ साथ रक्षकर बुझा ही उन्दर दिच्यतिया है -

कपिलात तन ती जब फिरी
तेजों में कपि-कपि उठली
श्वरी दिशनर हो का का
अपने ठाउरे को गुलाबी ।

यहाँ पृष्ठति को अपनेजार में "सत्यम शिवम भूमध्यम" के लय में प्रस्थापित दिया गया है। पैसे -

श्री गिम्यानी फिरी सिंगाका
शर्मृत्रा शरी, कक्कवार्षे
था विराट वत-वृक्ष बहा
फिसल बृह जटारे ।

1. चाँद चाँदनी और फेक्टस - डाँड नागर
2. महादुर्गावान - श्री नरेश मेहता - पृष्ठ 38
3. शवरी - श्री नरेश मेहता - पृष्ठ 34
4. शवरी - श्री नरेश मेहता - पृष्ठ 15
यहां उन्होंने पृष्ठ-चित्त का बड़ा ही उल्लक्ष मानव-करण किया है –

इसके बाद वहां लविकार अन्जाम आया था –

उत्तर में सप्तर्षि तारे
गहरा नीला हो आया था
गम हुआ, विरिज बिनारे।

- श्री मेहता

तैरे सोही समीवारीय अन्जाम आया था, लविकार नंबर दो, जिसका बाद वहां लविकार कर छोड़ दिया।

आज के बाळ, केदार फॉर्म की तरह
दौड़ते है झटर-उथर, हिनारित हैं गरजकर।

- डॉ० रामकुमार "गुप्त" "मिनता" है।

आधुनिक काल के पृष्ठ-चित्र में हो गई पृष्ठकोप हट्टी किये हुए क्रम पक्ष का वैदिकता

कायानियों के द्वार में हैं पाठों की गंध
परदों में मग्नती ध्वनियों के गाँव
गोद के हेक मरी मालनी को
काटे में पंस रहा लट का विवाहन।

- डॉ० फिनॉर काबरा

बालों की और में लोही किरण
भूल की परछाइयाँ दोही निरंगन
वांस्तत तट पर खूंटी बागोंकीयाँ
वांस्तत के बूढ़ से योगी करण।

- डॉ० काबरा

1. श्रीरी - श्री भरेश मेहता - पृ 10
2. "केदार केलप" "विचित्रद" के बील" - डॉ० रामकुमार गुप्त - पृ 36
3. "पाठों में मग्नती ध्वनियों के गाँव" "भूल के प्यास" - डॉ० फिनॉर काबरा - पृ 14
4. "हमले बाल्य गगन की डाल पर" "भूल के प्यास" - डॉ० फिनॉर काबरा - पृ 38
सुप्रस्त हें समय और तत्पश्चात के रजनी समय की बड़ी ही उल्लंघन का माध्यम में न्याय लिया है। ठीक वैसे ही प्रकृति का बड़ा ही उल्लंघन करन यहाँ काबराजी ने किया है वैसे —

आ गई है ठंड
कंपकंपी ओढ़े झुके दिन,
और दिशुजन में सिमटकर धरती रात,
केवल साँख, तोहां पुगात,
मीठा वर्दः सीफर आ गई है ठंड। 1 — डांग काबरा

काव्य ने यहाँ ठंड का अस्तित्व दृष्टि तत्पश्चात भाषा में लिख किया है। साथ ही दिन और रात के लिए सजीवारोपण अक्कार का प्रयोग किया है। अपनी स्थिति का साम्य प्रकृति के बाळों, तारें, पुष्पों, पूर्वों, किनारे, गंध, फिलाए आदि में पाकर आदर्शिक कवि अनन्दानुभूति करता है। उन्हींने प्रकृति का मानवीकरण किया अर्थात् जीवन द्वारा तथ्य वात्स्यलक्षण कराए जाते हैं। जीवन रहस्य के बोध का मक्खी हे जीवन के सीमन्द्र सुध एवं सतन्त्रता का बोध प्रकृति द्वारा उजागर किया गया है। साथ ही प्रकृति के बालक की सहज दोनों पक्षों से मुन्दर विद्व विद्वानों की अन्तरानुभूतियों को रखित होकर एक मनोहर र सीमन्द्र की सृष्टि करते हैं। वैसे —

है स्वर्णित कियारे, वृध सम्बन्ध
किशोर कण कण में मृदु जलकण
भीती धरती की मधुर गंध
पूर्वों का तीरथ लम्बा सम्ब
भर गए दिशाओं में सत्तार
व्यन्त्र सहीर, नंदां धन
पुष्पा ते लचा गई कंका। 2 — कुंज मधुमालती वौकली

1. "मधुमल" है व्यास — डांग किसीर काबरा — पृष्ठ 42
2. भाव निर्देश "नर्तन" — कुंज मधुमालती वौकली — पृष्ठ 77
कुल मुम्मलीजी ने प्रकृति का नारी के लिए जो सार्थक विचार किया है वह आपको आने वालें बढ़ा है। जीवन से सरस्वती अपनी शक्ति के साथ दुनिया में था।

बर्जी ने जब साड़ी निकाल दी जब पानी तिलबाए दर्शन पर भी। भरती का प्रकृति कृष्ण के दादासाहब मुक्तादर।

किसमें ही शर्म होती है। यथार्थ नेपाल है जी हार ला शही वांछित के सुनो लो। पर हीरबूटी शर्माई।

प्रकृति का बढ़ा ही रमणीय व्यावहार प्रकृति सुवास लघु ते सुने से अम्ने है। रात के जो वर्षा हुई उसका परिणाम प्राप्त के शर्मक्रमों में दृष्टत्व है। 

बूझ हुई
गौँ ने आसपास के ताल तैयारों को
सुनो
लहराते देखा
बच्चों को पानी लेकर
प्रस्ताव देखा
और भेंटों के बूझ को
पानी में पाँगुरते देखा।

पाठक की नई नवीन कल्पना के सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्हें एंटीना पर नाचते हुए गोर ने हुए विचार किया है। 

1. भाव निर्देश - "सातन में" - कुल मुम्मलीजी चौबैल - पृ 45
2. मेरा गाव : तीन परिस्थितिया : दो - जनरल ऑफ बी मोस्ट्रॉ माफ बरोडा,
   1992 - पृ 187
तो कहीं प्रृृति की बोधनता भी नजर आती है इसे -
यदारथी तुर्यं, रतननिधि चन्द्र
tारे चुम्बे, वेढ़ों में चुम्बे
मेरे लिये
तो भी, गगन क्यों वाज दीवान हैं ॥ — पौरो हसित बुद्ध

यदां तुर्यं की तेजस्विता, चन्द्र की शीतलता और व्यूं, तारे वालों के
माध्यम से क्रवि ने प्रृृति का सत्तिक पिल्ला किया है ।

कभी आशावादी क्रवि प्रृृति की कुछ अलग अंग से व्यक्त करता है इसे -
वासनी पाँवों पर
गंध लिये आती है ।
अग्नि की धू-धू
गीत नया गाती है । — द्वानंद जैन

तो कहीं प्रृृति में सजीव वारोपण करके विरर एवं फिलन अभावहूँ शंगार रस
का उत्कुल उदाररस हैं यहां फिलता है। इसे -

dुन्दाक्षर तिलक रहा तिरहुं के गीतों पर
पतजल हो जाने रे क्या पाया भक्ताकर ॥ —

— डो द्वानंद जैन

1. "तीन" — डो रघुनाथ पाठक — मेरा गाँव तीन परिभाषा : दो — पृ 188
2. "आनंदविविद" — पौरो हसित बुद्ध
3. "रतनन्दी प्यार" — श्री द्वानंद जैन — पृ 10
4. "रोसनी की तलास" — डो द्वानंद जैन
प्रेमामृति मानव जोड़न की एक नैसर्गिक प्रूणिति है। गुरूरात के आधुनिक बौद्ध ने उस प्रूणिति को अपने तपस्वी भावात्मक विचारों को प्रूणित के संयोजन में उद्देश्यित किया है। वैसे -

"अब तुराव ने
बुद्धी के कानों में
न जाने क्या बात कही।" 1

- रमेशचन्द्र प्रमाण "चन्द्र"

प्रेम के दो पक्ष होते हैं। तंयोग शृंगार स्वर्ण वियोग शृंगार। पहला वियोग शृंगार का बड़ा ही मुद्रार चित्रण होने मिलता है -

अपनाय सुमान को दुःख करो, दुःखानि सर्द हो गया।
यदि सङ्ग में पानी रही तिपिका यह कैसे उंगारों बन्धुओं जगु है?
समुद्राचार्य हैं अपने विलुको, परिपूर्ण ते बस्मारी महा जय है?
तर्थ पृथ्वी हैं फलाफल ताँ इन आयन का दिन की पुष्कर है? 2

- बुध मुम्मलती

प्रेम प्रेम की पीर का अनुमूकन करने वाले आधुनिक गुरूरात के सूर्य कोई बालासंग्रंहकरी को देखिए -

बुधन दमा दरार में की हमरे प्रेम नियुक्तों भयो चीर वियोग।
बुधन यमके अति पुराव पाप की पीयतुं आव तुरवो है संयोग।
रेठि दियू विला में विकल्प कारत है कहा जानत लोगा।
प्रत्य वियोग तो नहीं टारत जानी ये आपके सर्क के भोगा। 3

- बालासंग्रंह कंपनारिया

1. नमः दरती नमः आधा, तम्याच्छल भो अम्बारकर नामपुर,
   डॉ० रामकुमार करम, डॉ० रमेशचन्द्र प्रमाण "चन्द्र"

2. सुमान की पाती धृष्टाभावीनो - बुध मुम्मलती चौकी

3. 1942 के बाद के काल - उमारकर जोशी, बालासंग्रंह कंपनारिया
प्रेम एक और हमारे जीवन में अनेकों पारिवारिक - तामाजिक सम्बन्धों को विस्तार देता है तो दूसरी ओर वह हमारी जीवन की रुचियों को परिस्फोट, म्यायाे और कल्याण की पूर्ति देता है। प्रेम भोग्य वस्तु नहीं अत्यंत आस्थापूर्ण और मानव अपनी चेतना के माध्यम से ही होता प्राप्त कर सकता है। प्रेम सत्यगाम्य प्रक्षेपण को विकास और सौन्दर्य देता है।

आधुनिक कल्याणों में अविनाश श्रीचार्यास्वामी ने मानो पृथ्वी को बड़ी नबदीकी ते देखा और सुना है -

पूरा फिर से पलायन
पीला तब अमलवात
लन्दर्स ता तारफ़
लेख गा रहा फाम
घाटा है गुल पीकर
दुनाया बनता कोर
पीपल संत्यासी बन
संकट पड़ता गुज़र।

श्री अविनाशस्वामी ने पृथ्वी के तत्त्वों के माध्यम से मानो पृथ्वी को सजाया है कहारा है।

पुराणवाद, तन सनन तन तन
ताल बरता है अभिनन्दन
उरता नीर निरन्तर कम कम
रस से पौधे हुए हैं कम कम।

तो कहीं पलु जाय सो एक स्वाती जायः में श्री पृथ्वी को नबे हुळे सब्जियों में तृप्ति का नामा पहनाया गया है। जैसे -

चूँकि से चूँकि
विस्तरों का सौन्दर्य
शारण गीत।

- डॉ भागवतारण अग्रवाल

1. समाजीन दिनिकी कथित - डॉ अम्बारोहर नागर,
श्री अविनाश श्रीचार्यास्वामी "आमूख" - पृष्ठ 17
2. पुष्प तक बृन्धों पर पुष्प "आमूख नीर" - श्री अविनाश श्रीचार्यास्वामी - पृष्ठ 32
3. शारण गीतिक - डॉ भागवतारण अग्रवाल - पृष्ठ 31
प्रृवति को ही हृद्यानिवित करता हुआ और एक हाथु -

हुक्ता नम
युमने पहाड़ी का
गांत सोन्दर्क । ।
- डॉ अमृतवल

उपर्यक्त पंक्तियों में सोन्दर्क विपाष्ट नम का पहाड़ी को युमने के लिए
युमने की लक्ष एवं तज्ज्ञित व्यापार की रामीय इंद्र वर्तना की गई है। तो बड़ी
प्रृवति का तीर्थ विचार भी हुआ है। वैसे -

वर्ष की बीनी बीनी पुहारों से
भरा भरा आशागढ़
बीनी मांदी की हुक्ता
बीनी बीनी ब्यार है ।
- दिव्या राक्ष

उन्होंने यहाँ साँझ एवं सुबह वैसे प्रृवति के तत्वों को केन्द्र में रक्कर अविरत
चलो मायव प्रवाह की बात कही है। वैसे -

उत्ती साँझ को
हुक्ते तुरुच की
उक्तित आशा को
रोज निखटो -
अविरत चलता
मायव प्रवाह ।
- दिव्य राक्ष

प्रृवति मायव की 'दिव तज्ज्ञी' रही है। 'किन्तु महानारिय तंत्रिति आज
मनुष्य को प्रृवति से दूर ले जा रही है। यही कारण है कि परविभाषक के कवियों
ने प्रृवति के बड़े ही आकर्षक विविध शब्दों की पुलिका ते अनि लिखी हिंदे हैं -

1. शारवत चित्र - डॉ भावकारण अमृतवल - पृ 64
2. "कुवा" - श्रीमती दिव्य राक्ष - पृ 37
3. "सपन्द"- श्रीमती दिव्य राक्ष

-----------------------
नारी सौन्दर्य

आयुर्विक कविता मे नारी सौन्दर्य को बहुत महत्व दिया है। उन्होंने नारी सौन्दर्य का बड़ा ही उच्च विचार दिया है। उन्होंने प्रूढता के विषम फलों को माध्यम करके नारी की महत्वता को व्यक्त किया है। तत्परता के कवियों ने सौन्दर्य के न्यमुखों के साथ जीवन को सीधे और सीधे सौन्दर्य को दुःखिता कहा है। नन्दी कविता से आते-आते सौन्दर्य सोच ने सीखिता का सहारा ले लिया। सामूहिक यथार्थ को सौन्दर्य सोच की दुनियाद माना गया।

पूर्ववक्ता काव्यशास्त्र मे नारी - चित्र का आलंबन एवं उद्दीपन के माध्यम से कालपिन्नता को केन्द्र में रखकर होता था। भाषावाद तक आते आते नारी शुष्कता और लघुबोधता के ध्वनि की ध्वनि सुनाई पड़ी। तर्क की नारी को शब्द की प्रति नृत्य के व्यक्ति विवेक दिया गया अर्थात् "भाषा" नवी कविता का सौन्दर्य सोच पुरातन मुद्दों और सौन्दर्य की अस्तित्वता के अभ्यास के मुक्त होकर भी चुपचाप नहीं वैद्य करता। यह भाषा और प्रूढता के अंदेश भी मुझे हुए ध्वनियों और व्यंग्यों को बड़ी ताकती से उभारता है।"  

1. नन्दी कविता नवा आकाश: संगीतकाय की अग्नाशयक नागर, 
   नन्दी श्रीवास्तव, राम कुमार गुप्त

2. कृष्णा गोस्वामी - नन्दी कविता नवा आकाश, डॉ. नागर, डॉ. गुप्त - पृ 84

3. नन्दी कविता के प्रतिनिधि: वहमीरात राम - पृ 204
एक और नारी मुक्ति एवं स्वातंत्र्य की बात अपने अन्य अंदाज में है तो डुरारी और नारी शोषण, नारी दलन, नारी अत्याचार आदि अपने अंदाज उत्कर्ष पर है। कहीं अपने स्वास्थ्य के लिए समाज से बुझकर नारी है, तो कहीं अपना दामन बचाती हुई दियारी नारी है जिसकी आज की नारी है, तो कहीं समाज द्वारा डुबाई लगी समाज मात्र बनी हुई नारी है। जात ही कहीं कहीं से अक्ला माती नारी को चलाना बनाने का एक तूर्च एवं तफन प्रयास की हुआ है। आज के माहील का तकाजा अथवा अरियता एवं अश्वित्व की चाह और वर्तमान आधुनिक नारी का एक पूरा है। आधुनिक कवियों ने नारी प्रक्षा को भी पुकारा दिया है। जैसे कि -

बैठी धन नहीं व्यक्ति है
पुनर्जी अक्ला नहीं है सक्षिकता
क्षुर की जान्वारों में
उत्तम शिक्षा का उत्प्रेक्षण दी
बहुत हुआ नारी शोषण
उठे जीवन का
नया आयाम दो।। - मीरा श्रामिकवास

आधुनिक नारी की आज की स्थिति कुछ इतना प्रकार है। जैसे -

उद्धार पहले तुलसी के पतलों से
चंद्र से तंजोई गई, पुजी गई,
बाद में -
पुजारी सी महकी, महाकवियों में
संवारी गई, सबलाई गई
और -
आज
"मनीप्लांट" बन गई है। - मंजु "महिया"

1. नौकर हैं तबिताभार के तुलसीकुंड - श्रीमती मीरा श्रामिकवास
2. मनीप्लांट - मंजु मटनागर "महिया" - पू 18
यहाँ आधुनिकता पर करारा व्यंग्य किया गया है। आज भी नारी
की यही स्थिति है कि -

लाई का रही है बड़ी बेटियाँ
निर्देशों की अतिकृत के तारा जा रही है जान
भगाई बाती है के बेटियाँ बिन व्याप बिन सगाई
देवत के आनिर्दिष्ट कमी दूम जाती है व्याप सगाई।

- मीरा रामनिवास

अथवा

अब न तस्वीर थी थोड़ी
न ही कठपुतली
समय के थोड़े से
लुगाली
बीज में लटकती
- - - अटकती
शब्दी भ्रमित
रिकी
एक नास्ति थी थोड़ी।

- नलिनी पुपेरिक्षि

किन्तु आधुनिक परिवेश में बड़ी बड़ी आज की नारी अपने आतिथे से टोर
लेका अपने अलग अस्तित्व यह अस्तित्व के प्रति बड़ी ही सम्भाव्य और विपन्न है के अपने भारतीय नारी - अनुभवों की दक्षीन पर कही
विनिग्रहित की, अपनी अस्तित्व को कर रही है पुष्पात ! आज।

- मंदु

1. श्रीमती मीरा रामनिवास
2. नलिनी पुपेरिक्षि - अनुभव
3. बौनसाई सीतामाओं के गुरुपुरुषी - मंदु भटनागर "मंदुमा" - पूर 16
हीरे कैसे ही आधुनिक नारी का हमारी समाज व्यवस्था के प्रति गृह्योद्वह्य डूबन्त्य है। कैसे -

बेटी पत्नी माँ और दादी
नये नये उपनामों में भरती रही
हाल मेरी अलग अवस्था भरी न रही।

- मीरा रामनिवास

अर्थात् आधुनिक काल में नारी को मात्र मोक्ष वस्तु न मानकर उसे उसके
तही र्य स्म में पढ़वाने की कोशिश हुई है। न ही उसे मात्र सौंदर्य की शृंखला
माना गया है। उसे बौद्धिक तरंग पर तराशा गया है। उसके समान अलग क्रूड की स्वीकृति
की निदान है। उसे रचना मात्र न मानकर व्याकरणित से जाड़ा परखा गया है।
अब ही नारी व्यक्तित्व के धरती पर चढ़ी जीवन की रचना पूर्ण मनुष्यों
को अनलेने की ताकत निर देता है। हे आधुनिक काल में नारी का विद्रोही और
स्वांच्छिक होता है। विकास परिवर्तन में दृष्टिकोण के विद्वान के
का प्रयोग वर सामूहिक काल में भी नारियों पर हो रहे अत्याचारों के प्रति मानिक
लक्षित किया गया है। विशेष परिस्थितियों में नारी जहाँ तक हो सके अपने आप प्रौद्योग
को करती ही है विशु विनियम हो श्रव उसे अंततः खेत की तहायता के लिए
पुकारना पड़ता है। यहाँ विद्वान श्रीमृण्य कार्य रूपः

आया था -
मुझे पुकारते हुए
आभियों में धिने एकाशी पारी सा
पंब्द पाघड़ता यह
विशा पिया का
अर्थस्वर आया था।

यहाँ विद्वान के समय का दृष्टिकोण के अर्थस्वर के आभियों में पंब्द पाघड़ता
एकाशी पारी के दिक्षा द्वारा ज्ञातित किया गया है।

1. उत्तर महाभारत : टॉप वाँकर
अधूराकवियों ने नारी को अनेक ल्यों में हमारे तनयुक रखा है।
कहीं पर नारी का कहीं पुराना शोभा, दमित, फीर्दित ल्य आज मे सोबूद है
किन्तु उसकी अभिव्यक्ति का धो बदल गया है। आज नारी दूरा ल्य में से व
है "सनिप्लान्त" ही हो गई है तो कहीं वह अपनी अतिसाह के विश्व में चित्रित
है किन्तु भूख कवियों ने नारी को उल्ल ल्य में पिघला किया है। वह भक्ति का
पुतीक है। नारी कविता को प्रभाव देना आवश्यक है। कवि की दूरी से नारी
कौशल उत्सर्जन कर उसे जीने का नया आवाम देना होगा। तमाज में उसे अपनी
अनु परम्पराओं बनानी होगी। आधुनिक नारी पुरानी बड़ परम्पराओं को नहीं
मानती है। वह एक विक्कोट के ल्य में भी आज उग्र रही है। वह अन्याय ने
सहन के पथ में नहीं है और वह र्पण की मृत्यु बनार जीना नहीं चाहती।
वह ये देवी या पूर्णीया मर जलना चाहती है। आज की नारी तो तिर्य को नहीं
ल्य में जीना चाहती है।

आधुनिकता के साथ में पनी आज के दूरा वैसे क्वारी मातार, पराती
मन, जुआ और गरजा आदि आज के पूरा में केन वन गया है। ये ही आधुनिकता
के मायदा वन कर रह गये हैं। आधुनिक कवियों ने समाज के इन तमी दूराओं को
उघंगात्मक ल्य ते हमारे तनयुक रखने का एक बड़ा ही लक मुदा किया है।
उन्होंने बना र्विभी दिपालिकाएं के प्रामाणिक ल्य से इन सब बातों को एवं आज
की मृत्यु आधुनिकता को तक़बर तनयुक रखा है। आज भूनाय विरा वायि से बड़ा
रही है उसे देशक लक्षाता है। मनुष्यों ने इसी इमान बत दिया है। यमिनिक व्यतिता
में उसके दुराए आज के मनुष्य की र्पण के आराम के अंतर्गत नेकी मृत्यु आज की
तोड़ा भी है। वह महिला का एक हिस्सा मात्र बन बर रह गया है। इन सब बातों की
आज के कवि ने न्याय दिया है जो पुपमीत है।

ताज की मुलीन विरा विफाकर उम्री है। उसमें एक महानारों का प्रभाव
मही है। विश्व के आदिवासियों और वातावरण के तात्यों ने एक ओर तो गाँवों
को नगरों से जोड़ा है, दूसरी ओर अनुपमीका, की आपातार्पण के इन गाँवों को
तोड़ा भी है। आज महानारिय विराटात्मा आदि को अपने क्रोध में कर का
घूम घूम कर रही है। उसमें भय, अंगुरास, अंदेशा, अजनीपन की जाति अनवृति
उपलब्ध कर रही है।
आधुनिक काव्य में हरेमोदमा का आमास भी नजर आता है। परिणामतः
बिज्ञातिक तंजियक इन आश्वास नष्टप्रयायः होने की संभावना है। साथ ही मधुराई,
वरेतमारी, पक्षशूना मुख्य नेता एवं काँटी फिरती लाखौं के समान मानव पुलो तथा
चुमाई होरिएवड़ी में खुद एवं खुद के बीच संघर्ष का जानवरे जीवन के दर्पण ने खुदा
वीरित की निराकार भाव दिया है। यही कारण है क्योंकि आधुनिक काव्य में
हनें बढ़ीं बढ़ीं निराकार भाव की कक्ष मिलती है किन्तु मुख्य स्वभाव आमासढ़ी
है। स्वरूपता प्रामणित परचाब आत्मविवास ने अपनी एक कक्ष बनाई। अपने
अर्थतत्त्व के पृथि वासनकार ने जन्म लिया। डे आत्मएवादी हुए। विंक्षे के 
रितित्त्विंक्षे में भी डे आत्मविवादी रहे रहे किन्तु आधारबाजों की नाश करते होतीं
विक्षेपण से मुख्य में वृंदा ने जन्म लिया और धीरे-धीरे कुणात्मगत व्यक्तित्व के
कारण निरास, अनात्मा, आदि का जन्म हुआ किन्तु आज के मुख्य के मध्य के
पृथि खुद आमास को, अभिभावक है आत्मएवे जन्म के अनास, निरासा एवं खुदा
हें हृदयाकोट्यों होती है वहाँ आत्मा, आशा एवं विवास भी मिलती है।

हें आधुनिक काव्य में सीखिता की पृथावनता मिलती है। इसले आधुनिक
काव्य में आर्थिकता का नोप और नारायबता का वर्तमान सुन्दर आता है।
बुध्दि तथापि के प्रमुख होते ही तत्त्व को प्रामाण्य मिला। हे परिणामतः मूल्यों आदि का
लोप हुआ। यही कारण है क्योंकि आधुनिक काव्य में महापत की अपेक्षा बुध्दि
तथा की पृथावनता हुद्धित होती है। इस्ने अनात्मा, अनेक एवं एवं एवं एवं एवं
माधुर्य में अंधे के लिए आपसी एकता, उदारता का व्यक्तार आदि के अन्तर
आकारक की श्रेणी भी कुछ देशवासी राजनीतिक कार्यों ने तकत कम्बाई है अवसर
हें।

गायक जीवन दर्शन से प्रमाणित विद योड्मोहाई माकस्तार का कहना है –

एक पिता है, एक देश है, विलिम र कर के रक्षन है
भारत को तो महान किनारे, यही सत्य ते कहता है।

उच्चतर भविष्य एवं पुक्क हास्यवाद की गहरी उदासित मानवनाथों को
व्यक्त करते हुए "परिवत्र" के हरिव मानवकार का आदर सुप्रसूत करते हुए बहाते हैं –

1. समय की पुजार : श्री मोहनमाई मास्तार – पृ 20
भा जाप विष्णुता तारी, ब्रजमाल धरित हो नित नई सुरमति संग्रहित से जन-जन पुरुषन दर्शित हो मानव हो धन व्यारा, मानव हो कर्म व्यारा
भारत का कर्म-श्रम लयों लढ़म ही हो प्यारा।

अध्यात्मिक राज में साम्प्रति परिशों की हट्टिया, नैतिक मृण्यों का रिपोर्ट,
पुराने मृण्यों का विस्तापन, आस्था का लोप, राष्ट्रीय अनुभव राजनीतिक अवधितन
हासियों के फूलार, आदि का बोलबाला झटका जा रहा है। राष्ट्रीयता के हामी
एवं सुरार के व्यक्तित्व साधारण तेनासी डॉ. रामकेश त्रिकाती ने वर्तमान
राजनीतिक अनुभव एवं अवधितन की ओर गीत रचित है:

पी राजनीति का विश-प्यारा, वना सही है हामी,
रोती कपड़े गिरामाला, लगा हड़पतां का ताला,
भारत की शिक्षा लीमा, है वनी क्राफिका ही हीमा।

- रामकेश त्रिकाती

राजनीतिक अवधितन के साथ-साथ केवल मृण्यों का भी लोप हो रहा है
और राष्ट्रीय परिशो का भी हास हो रहा है। जनता जनाएं में जनता की आस्था
नें रही वैसे -

लग रहा है मां कै हे यह राजनीति का फूली
दार पीछे का हुआ है तामने का बन्द है।

- रामकेश वर्मा

आप की निर्मली तर्कार और आप की जनता के बीच का समझना वापस
यहाँ उबारना करता है कि –

# वर्मा वर्मा

- रामकेश त्रिकाती - पृ. 80
दुम तोप, तेज बन्दूक तहत में शुक्र बाँस की लाटी।
दुम जिती मील की चिमनी हो, में महाने की भट्टी।
- रामाकृष्ण शिबा।

राहत कारणों ते मरी है, और हूँ में तर कदम
उसे न दर, तीनी उठा मत, अपनी ही तरकार है।
- भावानदास बैन

प्रथम उदाहरण में अपनी पुष्प की अहंप पौड़ा की "अहंपे की भट्टी" के हारा तथा तिलीय में तरकारी गैर पिपेदाराना सहीम गुर्तित का अपनी ही तरकार के हारा गहरी स्थितित की गई है।

आधुनिक भूमि परिवेश एवं कड़ु स्थिति की कठिन नागर्जुन हारा बड़ी ही साक्त श्रमिकता मिली है। प्रथम उदाहरण में नागर्जुन ने "रथाने की लड़ाई" एवं "हुकर से पेट सहाने" के प्रयोग द्वारा परिस्थिति की अक्षयामशिता के गुर्ति पहली तंत्रित किया है।

- जैसे -

अपनी अपनी बातों पर तब अड़ रहे,
निक्ष स्वाभाव के लिए रघुन ते लड़ रहे
तबको अपनी पड़ी, पराई क्या पड़ी,
हुकर सा निक पेट आप हैं भर रहे।
- डॉ० नागर

अंश
आधुनिकता में उल्ले हुए आज के जीवन कमान के प्रृति एवं बड़ी आशायी के निर्माण के लिए कुछ नियोजन की तरकारी नियोजन योजना के प्रृति ठहरा।

1. वर्तमान - श्री रामाकृष्ण गिरानी - पृ० 50
2. सम्बन्धी हिंदी कविता "मुहरत" - श्री भावानदास बैन - पृ० 16
आज का अख्तार - डॉ० नागर
3. आज का अख्तार - डॉ० अम्बाकंकर नागर
व्यंग्य एवं जबाबदात घोट करते हुए जागरक कवि भावतरंथजी कहते हैं -

द्वारा नाम हैं -
पिछे ताल सितम ग्यारह लाग,
ज्ञाती माताओं ने गर्म मिरवाये थे,
और इत ताल -
पूर्व साथ से अधिक ने
छाने हाँते बच्चे खेला होने से बचा लिये
और कुमारियों की हरजत भी।
[डॉक्टरों की आमदनी भी बढ़ा लीं]

- डॉ. भावतरंथ अग्रवाल

यहाँ व्यंग्य का उत्कृष्ट उदाहरण हो गया मिलता है। यह व्यंग्य आधुनिक कवियों की विवेचना है। अज के परिचयों को यह बड़े ही सुन्दर तंग से उजागर करने में उपयोग रहा है। व्यंग्य का एक उत्कृष्ट उदाहरण हो यहाँ मिलता है।

जैसे -

हूँ के इंद्र पर पलती है जिन्दगी
"मेरे भारत धान" बुझे को नमन बनती है।
हूँ के बांध लग दूधछिद उतारते हैं
दोनों ही भूत के हाथों में बुझते हैं
दोनों ही लंग संग कोलते हैं जिन्दगी।

- कैलाशनाथ तिवारी

कविजीत नागरजी ने वर्मान पुँजी पीढ़ी की कर्त्ता पर कदाचि विचार किया है।

-----------------------------
1. डॉ। भावतरंथ अग्रवाल
2. अंबूरी शर प्रसाद: "मेरा भारत धान" - श्री कैलाशनाथ तिवारी -

पृष्ठ 60
भारत के ये नौबान
वे भावी पीठ के पृतीक
वे स्वतंत्र राष्ट्र के कर्नार
तन से वर्ज, वन से भूरिता
कैसे दुर्भाग्य ! अस्ति जातीजित !
तोते हैं वे जिस अंदर में
ताने तम का भीषण विटान । 1

- डॉ. नागर

कैकांकित
आज के / कुम में मनुष्य का युंग्य जीवन मनुष्य के परस्पर बीड़े सम्बन्ध एवं
मृत आपार-पिंधार और उसका अतर हमारे तन्दूल रखने की कोशिश कर रहा
है। आज के युग में मनुष्य आगे बढ़ने की दौड़ में अधिक से अधिक गदरी वाई में
उत्तरता का रहा है। मनुष्य मानवीय पर दी चिल्ल है उसका जीवन एक माननीय मात्र
बन कर रहा गया है। हा तब बातों पर आधुनिक कवियों ने तीना व्यंग्य किया है –

हम जिन्हें चौथा लो गये हैं ।
युद्ध की विभिन्न चिट्ठियाँ को
मोजन के तात्त्व का लेते हैं
और
रात को कहानियों के तात्त्व
पृथक तो जाते हैं। 2

- दिव्या राकल

या

कहूं ! न कहूं !
प्रेम ! लोको, पुछा लूं
कम्प्यूटर से। 3

- डॉ. भावाकारण अग्रवाल

1. बॉब जॉर्ज ओवर्ड केम्ब्रिज : "ये रिश्ता के वर्जर स्वामी" : डॉ. नागर - पृष्ठ 66
2. मौन का आगमन "दीठ" - दिव्या राकल
3. दूरे हो दूरे आकाश : डॉ. भावाकारण अग्रवाल - पृष्ठ 29
कम्प्युटर के द्वारा लिखाये विलाये जाने की सामग्री अद्वितीय विद्यालय की बड़ी लघु है के साथ कम्प्युटर से ही पूरा कर प्रयार करने की मनोकामना के प्रति लंबित कर अनुवादक ने सामग्री समाप्त की तथिक अधिनियम वर्ग तीनविद्यालय को स्पष्ट किया है। अपने दिन-शो दिनगार या माता-पिता से नहीं किन्तु कम्प्युटर से पूरा कर प्रयार करने का करने की मनोंगत्य की यहाँ तत्काल ध्यान देता है। वहीं कवि पुरावधायद के धरातल पर खड़ा है। कैसे -

मित्रता के आगे बनाया जितने निर्भर है। - डॉ। नागर

तो कहीं कवि आशाशायक भी है कैसे -

हर सुख विभाग का सूरज के सम्मान नहीं।
हर अमावस के श्राद्ध का सम्मान को, सुधित नहीं। - अविनाश

निराशावाद भी आशावाद के साथ ही पलटता है। कैसे -

अपने कुर्सी में बूढ़कर,
उन कुची रोगनी को,
वयों दुःख 3। - दीव्या राक्ष

लाखावादोस्सर कविता के परमाभ अवसर कवियों में एक विशेष पुराग की बागृति एवं पुरागत पाई जाती है। अतः योजना समावेशक कविता का पुराग त्वर रहा है। स्वातंत्र्य पुरागिन परमाभ निदर्शन दीनो उदासीनता ने बुधीवी की भी हताशा के गले कुर्सी में धबेख दिया।

1. डॉ। डॉक्टर ओर डॉक्टर जेल्ला : "अमावस और तपाई" - डॉ। अंद्रश्चर नागर - पृष्ठ 33
2. फिल्मे बहादुर के दूरतमुक्ति : श्री अविनाश
3. "गुणाह" मौल का आगमन : श्रीमती दीव्या राक्ष
क्या की के लिए, हमने अपना भाग्य लेकर गुम्बारे हामों में दिया था कि तुम उसमें हमारी ताली के पिक्सन का निर्देश गैर लिखा गया।

परन्तु यह मत मुझे, तुम्हारे पर तुर्क
सब काट पहुँच जाता है।

- रमाकान्त गर्म

अभाव निर्गामा के तर्क के साथ जाना की भी एक लिंग हों गिता है।

मोहम्मद की पूर्वी करती हुई कुछ प्रसादों गुल्मच्च कृत्य है।

1. क्योंकि बुधली तो, मेंत पदन्ता है

अनाम्या जोड़ता है, अवतरणीनीता जीता है

आत्मदया बताता है, उदात्तनीता में रखता है।

2. - डॉ० भगवतसरद अमृतवान

इन तब से हम रह तलाक है कि आज की कविता तनावपूर्ण स्थिति में ही पन्ना रही है। अंतिम शब्द देवीपूर्व किसंभ परिस्थितियों से गुरुत्व है। वह इत

विश्व परिस्थितियों में वीण जीने के लिए किया है। परिष्कारः वह कहीं झाला।

जादों, निर्धार, ऊंचा, वोकालपन, भाषाप्रण आदि में जड़ा हुआ है। यही

कारण है कि आधुनिक कविता में ही वह सब दिशाएं देता है। साथ ही तार्क,

आत्माप्रस्ता, श्रद्धा आदि का भी लोप नहीं हुआ है। जब तक मनुष्य है वह जीने

का पुष्पत सब अकल ही करता रहेगा। अत: मनुष्य वीण मानव मुल्यों की

स्थापना रचना चाहता है।

परिजीवन समय में अपना का अपना, सम्बन्धों में दरारें, तब तक की कमी,

आधुनिक विज्ञानकारी परिवर्तन के परिणाम स्वभाव प्रकृति के पूर्व-उदासीनता,

एकाधिक से आज का मनुष्य गृहत्व है। पैसे -

"बाँटें करती हरियाले लाने पैडी बुधियों।" - डॉ० अमृतवान

---

1. समकालीन हिंदी कविता: गुरुरात: डॉ० नाथवर, डॉ० रामकुमार वर्मा - पृ. 07।

2. आयोजन है: डॉ० भगवतसरद अमृतवान: पृ. 7।

3. वर्तमान वितरित: डॉ० भगवतसरद अमृतवान: पृ. 11।
या

"स्वाता का चिक्का, किसी पर-स्वी का
दुरान्त युध में, ममितिप्रद ऊल्लासः"  - अविनाश

वैधानिक शौय सर्व चिक्का के परिश्रम स्वाता दिनानक युध का
प्रारम्भ हुआ है तब से आधुनिक साहित्य के सर्व युध वाटे का उत्पादन दिन-दिन
बढ़ता जा रहा है। युध की प्रायाधिमता बढ़ रही है। इत्यतः उसके पीछे रंगे एक
दिनान्त के सर्व अस्तारार की रिसीकियाँ को और मानव ध्यान नहीं दे रहा है।
टिप्पणी करते ही विभव इन सामग्री की ज्ञान की और विशेष लय
ते गई है।

उत्पादनः।
भक्ति, श्रान, आध्यात्मिक वैरिया, शास्त्राध्यात्मक, द्वारानंद प्रायिका
की नकल, उत्तरी स्वामुत्सृति एवं तज्जवर उत्यासपूर्व अत्यन्तिक आदि की भुजात के
आधुनिक दिनान्त कार्य की एक अग्री गुप्तियता रही है। अतः विकास मनुष्यत्वियों
एवं श्रमुत्सृतियों से उत्पन्न दिनान्त उजागर करनेवाले रूढ़ि भूल सत्य अध्यात्मकरणक
सभी समय पर होते रहे हैं। वसारी युध में उनके स्वामुत्सृति सरकार, स्वामी शाक्तिक
परमाङ्क, बलदीन्द हाँडी की उपस्थितियाँ विभिन्न के और उसके भी
विभिन्न पुरुषांक के तात्कालिक को काफी प्‍रभाविक, अज्ञोत्तिक सत्य विश्वास
व्याप्त है। उन महामाताओं के तात्कालिक एवं दीक्षा ने उत्तर के ठंकता बन्धुः के
भन्दा अर्थात त्वस्कार, बाॅथा एवं उत्पादन भक्तियों तथा दीक्षेन्यक की प्रायिका
के प्रति गहरा उन्नत अज्ञात केवल फिरा है। जिसे माफ़ करने नहीं रेतु खर दृश्वियाँ
लोगों पर भी इन उत्पादीमात्राओं महामात्र अर्थात उनके अनुपालन कार्य की परायम
परिवर्त्तन में हैं। उपलब्ध होता है।

1. श्री अविनाश श्रीवास्तव
आधुनिक गुजरात के महत्वपूर्ण तन्त्र कथियों की एक समूह वर्तमान के दैत्यकाल परम्परा जो एकाधिक है उनमें कुछ वर्तमान काल की कथा, सत्ता के किस्म के वास्तव छोटे,

सूरत की इन्द्रधनुषः, तीराराठू की किन्नरकिन्नर तर्कवाती रवि दायनन्द उर्फ मुखिया-वर्तमान, झुकार के तुलिपाप्राय रवि उपन्यासप्राय, जस तीराराठू के अन्तर्गत रल्ली भाषा, विनाय के सागर महाराज एवं माताजी ऑफिसरवाली तारेगर के एंग्लोभाषी आदि समूहकी नीड़ है।

हें उपर्युक्त सामग्री, जालीन एवं उकस महत्व कथियों की वाणी में मर्कत एवं अपयातपत्रों के परंपरित गायन का अनुसरण प्राप्त होता है। रामचरित की महिमा, बलि तत्कालीन किस्म में आदि का महत्व निर्णय प्राप्त है।

तारा ही तत्त, नाम, जन आदि के महत्व की प्रतिप्रादित विषय गाया है तथा गाया एवं प्राधिक आदि के उन्मुक्त का आवश्यक विषय गाया है। उनमें वाह्यावटों का अंतर तथा व्यवस्थित एवं जान के महाराज का अंतर किया है।

रल्ली जान में लेख की नक्ता, ग्रंथ में उन्मुक्त की गौरवित तथा स्वाभाविक एवं अनुसरण का प्रतिप्रादित किया गया है। रल्ली जान में लेख की नक्ता, ग्रंथ में उन्मुक्त की गौरवित तथा स्वाभाविक एवं अनुसरण का प्रतिप्रादित किया गया है।

तारादेवी की दर्शनों में एक और ज्ञात अवशेष और ध्वनि वैतिक के बीच जान को गर्भम् है वहाँ बुद्धी हर बालका और कापुरुष के बीच नृत्याशाय देवा की पौराणिक विकास है। ओरिकारेवाकों में जन्म एवं विशिष्ट प्रकार की परमार्थपंकता, माता एवं अंतर की विशिष्ट एवं अनुसार गृहा, वाणी के रूप है देवा विकास है।

उपर्युक्त विवेचन की संपूर्णता के हुए हम यहाँ बुढ़ उदारकर प्रस्तुत करते हैं

वे -

या मन राम रंग बार्बार, आ अज्ञात तैली जात भाई।
तारा तमाम समारम्भ करते, तथाव ध्यान तत्ता मन जाई।

तारा
सातसंत में पारदर्शन करे, जम में मूढ़ ज्ञानो।
मुम्बई के चरण में प्रीति लाए, शब्द खूब पढ़िए।
मन क्रुङ्ग मम्बरला, क्रुङ्गरला ऐसे पायो। — नृतंजयार्य

गुरुौं बिे कोठ प्राण न पावे गुल्लारी ज्ञान निधरणी।
दिवों मः मिले ना, मतित ज्ञान निधरणी।
बुधुः रामजी मक्त तीताणी इती विधि फड़िकरणी। — तागर

ईकच्छिक्षा का एक उदाहरण देखिए —

tेहरा तुम्हें ही फिल जाओ, दिवे न देत आए।
"रंग" रूपया एक क्रिया, और न मांौँ दयाल। — रंग अखूँ

वेषप्रकृति मक्त के दर्शन हें आधुनिक काल में मिलते हें। तैले —

आर्य निभैदि मक्त वद, भ्याके� हांरि पद देत
छल पन आरंभिक कृष्णादृश्, अर्धे विह सा नि। — स्वामी ब्रह्मानंदजी

तो कहीं प्रेमामक्त का तूबर विचार आधुनिक कवयित्री शारित भेड़ ने

किया है तैले —

जब प्रायम ही तट पर, मुल्ली क्वकावे
मैं निरखि चाबि, मूबः-मूब रिचार्ड
पूौंौं मन की कटकिया, मैं तागर में मिल जाओ। —

1. गुजरात के लोक की हिंदी वाणी — पृ ४४२
2. गुजरात के लोक की हिंदी वाणी — पृ ४५८, ४५९
3. गुजरात के लोक की हिंदी वाणी — पृ ४७५
4. नीलाम्बर के नीचे : डॉ० शारित लेल — पृ ४१ "मध्यमो"
"निलाम्बर के नीचे" की कविता को फौं शानिता रेखा ने गुजरात की अध्यात्मवादी 
कविता की पुरस्कृति कहा या सकता है क्योंकि निलाम्बर के नीचे में संकलित 
अधिकांश कविताएँ उनकी कवितमानक, गुणपूर्व, अध्यात्म सदाचार, तत्त्व आदि 
से मरी हुई है।

कैसे - "राम रत्न, वहीं है नाटिक, वहीं है नेपा, वहीं है पार फिनारा।"1

ईसवी साधारण का बड़ा ही सूंदर विचार गुजरात की एक प्रतिनिधि 
कविताओं में निलाम्बर बहुत महत्त्वपूर्ण है। कैसे -

आपे थे तुम 
स्नेह का धिर तिमित्, धिर पावन, अगर तौर दान करने,
उजे धीर नूतन धुर्मिमान परम पूर्व।
पल्लव निर तेजस्व त्य दिखकर ही, दिय गो फिली ही 
क्यार कली बदलियों में।2

अध्यात्मिक अनुमूलक का बड़ा ही सूंदर विचार महात्मारण ने किया है।

कैसे - "पूर्णस में पूर्ण 
जोड़ा, भस्मा, गुला 
पूर्ण ही रहा।"3

ईसवी की तवापरिता, तवावपक्षता एवं ईसवी में आत्म भी आधुनिक 
कुछ कवियों में होने मिलती है।

कैसे - इस मन्दिर की नैया, जमाद की देवी 
'विरतनत तत्त्व के विन मुम्मा जिसमें न हो उपार 
मध्यमा आपर नैयामि मन्दिर फिशाल, मध्यमा आपर अपरम्पर।'4

काश्य अनंर, माताजी आकारेशकर, निलाम्बर कविता की 
तमोंका आधुनिकतापूर्ण कविता न होकर उनके अध्यात्म 
अनुमूलितियों एवं तत्त्व भविता

1. निलाम्बर के नीचे : डॉं शानिता रेखा - पृ 50
2. माय नंदिश : डॉं मधुमाला वैजती - पृ 2
3. ग्रामिक पिंडित : डॉं माताप्रणक गुप्ता - पृ 21
4. आत्मा के गीत : जनात्मा के बीच : डॉं मातुरक नेहरा - पृ 76
भक्त मायानाथ की दावी है। इसी आध्यात्मिकता एवं गहरी भक्तिमान्यताओं का लिअनाथ हमारे बीच कर्मान मृदानाथी चौकीड़ी, शांति सेठ, मानुष कंबर मेला आदि की रचनाओं में उपलब्ध होता है।

आध्यात्मिक युग की अद्वैत काव्यवाचर के प्रतिनिधि एवं तर्कधार वीरेन्द्रकुमार बैमे मृदानाथी की भक्ति मायाना, प्रभु एवं तपस्या को रेखांकित करते हुए कहा वह ध्यात्मिक है। "पूजना हूँ तन्त्र और गीते कहते हैं। उसकी दो पंक्तियाँ यद आ रही हैं -

मेरी पीड़ा प्यार हो गई
पतझर आव बेलार हो गई।

यह होरी काव्यरचित नहीं, उसकी अनुभूति का स्वदेशीवता ताजाकार है। शेषी तलिपुत्रा, शेषी पुराती और तिरिस्हाला, शेषा भक्तिमान्य, सनातन के लिए उसे आज तक उन्मुख देखे नहीं किया। मुझे मिला प्रति प्रति तितित है कि वह इकोई पूर्वकाल की योगिनी है जिनके उप जन्म में तपस्या अस्तुर रहने के कारण - एक और जन्म गिए है। मदु ग्राम की यह महिला और उसकी ब्रजदलिनी बैटी एक ताम है।...यारा की तरह उसे अपने उद्वर्तित हुके पुराता के प्रति प्रिय हैं जिने आत्मसाधन के आत्मसाधन की गति गाये हैं।..."तदा वन्नम् हृदयारविन्दं भवं महानी तत्त्वं नामायितो" उन्हीं तदा वन्नम् विषय और विषयी के वह ब्रज प्यारी बैटी है। इसी कारण में उसकी रंगिन संस्कृतियों का स्त्राय-राम कहना पाता हूँ और सन्त काव्य अनुलोक एवं अविवेकिय महत्व होता है।"

की राजस्थान

गुजरात की आधुनिक हिंदी कविता के निर्माणकारियों जिन जिन कवियों को किया जाता है उनमं बहुत ही का ब्रह्म ऐसे हैं जिनका देश एवं जीवन आत्माकर गुजरात के राजस्थानी स्वर्ण लंबाई में सीधा सम्बन्ध रहा है। और उमाकंकर जोशी, तुलसी

I. भाव निर्देश : मृदानाथी की मुमिज्वा - पृष्ठ 2-3
उनकी राष्ट्रीयता एवं देशीय पूर्ण स्वतंत्रता हिन्दी कविता नहीं थी। गांधी जी के स्वतंत्रता संग्राम में तुरंत योगदान के परियम स्वतंत्र देशभाषा एवं कवियों को यहाँ ते भारत लोगों को जाने की बुद्धि भलेवाली "दूर डटो, दूर डटो ये दुर्मिज्जालो, हिन्दुस्तान श्यामा हे" चंदा उंचा रखे श्यामा" आदि हिंदी गीतों का मतबंध उस गुजरात के केवल उम्मियाँयों पर था हिंदी ये गीत हिंदी गुजरात के बारिश दादा नहीं लिखे गए। हां, गांधी जी के तथ्यावधार दुकुट कवियों ने देश की स्वतंत्रता के लिए लिखा गया गांधी जी के राज्याभाषी अध्यायन से प्रेरित होकर गांधी जी को नायक बनाकर गांधी बाकी दुसरे हिंदी-नृत्य में शृंगाराय अभय रची है। हिंदी गुजरात के 'हिंदी' ऐसे रूप की देशभाषा पूर्ण हिंदी है। जिसे अभियान में पृथ्वी योग दिया हो। टूहराम भारिणी, दुवामाया काम आदि कुछ कवि एवं जिनके काव्य में गांधीवन्दना, देश प्रेम तथा पंक्तियों की भाषाय तथा अभय रची है। देश की स्वतंत्रता के लिए एक मानव हिंदी के स्वतंत्र एवं पुरात-पुरात के लिए गांधी जी के अध्यायन को बिसालत जोशी, देवदात गांधी, मोहनदास भूम, वाणी साहित्य कार्यकर दादा स्वतंत्र कर हिंदी के पुरात-पुरात में महत्त्वपूर्ण योगदान अवश्य दिया हिंदू इन देश प्रेमी-हिंदी प्रेमी धार्मिक के हिंदी कविता के नयूने उपवन नहीं लोटे। भाषात्मक शृंगार, अभ्यास तथा नृत्य, रामायण तथा आदि गुजरात की चौथी संस्कृति से अवधार तथा से बुझे हैं। वर्षान्वित गु मे इन बुझे हिंदी प्रेमी तत्त्वों ने गुजरात के स्वतंत्रता संग्राम में सीधा हिस्सा लेते देशी हिंदी कविताओं का निर्माण नहीं किया जिसमें ते स्वतंत्रपूर्ण गुजरात की देश प्रेम स्वतंत्र की भाषा का ती नहीं दिन प्रमाणिक आकांक्षा हो जिने। "दीनदयु" रामायण आदि एवं कवि ऐसे अवश्य है हिंदूपने पुरुष लय से हिस्सा लिया है।

"दीनदयु" अभाय देश मोहनदास के चंद पंक्तियाँ देखिए -

यह भारतीय पुरातता, जिन की शरण लेने मारे ।
इस राष्ट्र के उत्थान में हुए पुरुष साक्षि बोल दो।

1. तम रे मन गुजरात - श्री मोहनदास माप्तार "दीनदयु" - पृष्ठ 60
श्री रामकुमारी के अनुसार -

"मानव हो धर्म ज्ञान, मानव हो कर्म ज्ञान।
भारत का ज्ञान-भव, जन-जन हो यहों प्राण ता ध्यान।"

श्री काबराजी ने भी देशभक्ति के कुछ काव्य लिखे हैं, जैसे -

मनोबंधन ता क्षेत्र ध्यान, वज भारत, वज क्षेत्र ध्यान।

क्रयोपयोः: क्रयोप आधुनिक कविता का मुख्य मात्र रहा है। यह बोध शायद नोध का विरोधी अर्थ नहीं देता अत्युंपत्त शायद को पकड़ने की यथार्थ प्रक्रिया है। क्षणों में तिनकता जीवन, उक्ती क्वः, उसका उल्लास। क्षणों में निरम्यात मनःसत्यतं और क्षणों में स्पष्टता कोई भी सत्य कोटा नहीं है। अनुभूति विरंधित, पीड़ाबारी इतिहास असत्य है, अपहरण है। आँ: आधुनिक कविता अनुभूति प्रेरित गहरे क्षणों, पृथ्वीं और स्थितियों को उसकी समय आन्तरिकता के ताप प्रदत्त है। यही कारण है कि जीवन के छोटे से छोटे तामान्य ते तामान्य और विशिष्ट्त्व से विशिष्ट्त्व पृथ्वीक सामुदायिक कविता में नया तरंग पर रहती है। क्षणुता: आधुनिक कविताएँ कुछ क्षणों, पृथ्वीं और ताप दस्तों को आकार प्रदान करती ही कवितात्मक रंग-रंगत विलयों के माध्यम से क्षणों की परिधि में जीवन के तपू में तुषार की बाँधने का तपू प्रयास करती है।

जीवन क्षणुता है। मृदु ही यह मात्र सत्य है। फिर तथापत्य धन्यत्व में जनता सम्राट क्षणों ने चिरस्थायी कार्य केरें इस तरुण का मत वर्ते।

जीवन बिया जाता नहीं मौत की आड़ में रक्षा
मौत पहुँच सत्य है, जीवन भी जीवन है।

नदी होती थी, धरीदर बनाने पे मेरे पुनारे।

1. वैद्यकिति: श्री रामकुमारी निजाती "कामना" - पृष्ठ 69
2. आन यीवन ने छालीर देश की: डॉ० फिशर जाकरा - पृष्ठ 24
3. राक्षस तक के ताथी: सुनन्दा भार्य - पृष्ठ 9
4. टाद्दो: डॉ० ग्यात्मकर अनुवाद - ग्यात्मक विचित्र - पृष्ठ 181
क्षण का विकास अस्तित्ववादी दर्शन की भूमिका पर हुआ है। इस दर्शन के आधार पर पुरूषेक क्षण की स्वतंत्रता तत्त्व है। इस कारण पुरूषेक क्षण का महत्व अत्यधिक है। मनुष्य क्षणों की पृथकता में से उन सभी को अपनाता है जो गुण्डा भी है और गुण्डा भी है। कारण, उसकी मान्यता है कि जो क्षण जिस तरह में सामने है, दुरारां उसी तरह में सामने नहीं आ सकता है। पुरूषेक क्षण अपने में सम्पूर्ण है और यथार्थ की गति-शीलता में अभिन्न है।

व्याख्या

आधुनिक काल में हमें कई नई प्रदूषितियाँ भी दृष्टिगणना होती हैं जैसे जवर्दंत "व्यवस्था" का प्रासन्ध कार्य - "दलितें का मतीडा" में इस मातीडे ने सार्थकार्यकर दलित कर्म की पीठ के अन्तर्गत में पैठ स्वयं से आगे बढ़ा, उन्हें बन सोटकों के सामने देवार्क विद्यालय में में।

स्वामीविनायक का वीर्य समय उसके विना न जीना है।

आत्माओं का गरल भारकर उस को कभी न पीना है। \[8\] जयति "व्यवस्था"

दलित पैलन के लिए डॉ आम्बेडकर ने अग्नि परिश्रम लिये। उन्होंने अपने उपर दलित "दलितें का मतीडा" में दलित पैलन को की उमारा है। उन्होंने अपनी अनुभूति की व्याख्या से व्यवस्था हो कर लिखा है कि-

उस्मानों की लाग उठी थी आम नियम न भूला था।

छापाखान के सेंट्रल पर तह पाली की भूला था। \[9\]

मीराबाई की विक्रोधी पैलन को कहाँ दो दृष्टि भाव दी है?

तम्र व्यवस्था सार्थकित के उस की भितर कटारे तुम।

तुम से बढ़ दे कर और न कोई गुड़िया को लकड़ा, तुम। \[10\]

इस पुस्तक गु.का.आ.भ. का. भाव एवं विवादित नहीं प्रदूषितियों का सहसूचि संसागक वन पिंडा है।

1. रैन बोरा : "एक पारदर्शी क्षण का दर्शाकर दर्शाकर" - गृंडो डॉ डारिका प्रसाद सार्वभौम - पृ. 20
2. रैन बोरा.
3. रैन बोरा.